

Ait. Br. 1, 1. यस्यां स्थाल्यां प्रायणीयं निर्वपेत् ॥ रुचिरातिथ्यं निरूप्यते 15. रसस्य TS. 1, 1, 10, 3. 6, 3, 2, 2, 5, 1. नाकमेभागो निर्वप्यामि so lange ich ohne Theil bin, werde ich nicht Andern austheilen TBr. 3, 3, 3, 5. **Àçv. Çr.** 3, 10, 10. नवानां सवनीयानिर्वपेयुः von neuer Frucht 12, 8, 26. **कृविः Çat. Br.** 1, 6, 3, 19. 2, 2, 4, 6. fg. चरुम् 18. ब्रह्मोदानम् 13, 3, 3, 6. **आव्यम् KĀTJ. Çr.** 1, 3, 22. 2, 5, 9. स्थालीपाकम् **Àçv. GṚHJ.** 2, 2, 2. 1, 10, 6. 7. **KAUÇ.** 2. 87. fg. बहुदेवतामिष्टिं निर्वपेरन् **ÇĀKṢH. Çr.** 3, 6, 1. 13, 29, 14. — पारत्ने निर्वपति यश्च बीजम् MBH. 5, 1338. निर्वपेद्दकं भुवि M. 3, 214. निर्ववाप पवित्रेषु निवापम् R. GORR. 2, 56, 28. (अन्नस्य) अन्नमुद्धृत्य रामाय भूतले निर्वपिष्यति 4, 61, 10. शुनाम् u. s. w. निर्वपेद्भुवि M. 3, 92. 72. 220. MBH. 3, 1455. 13, 3842. **MĀRK. P.** 29, 20. पिण्डान् M. 3, 245. 247. 9, 140. पुरोडाशाश्चैव 6, 11. **BHĀG. P.** 4, 7, 17. 13, 35. चरुपुरोडाशान् 7, 12, 19. **कृविः** 5, 19, 26. न च तत्स्वयमभ्योयाद्विधिव्यन्नं निर्वपेत् wovon er nicht zuvor einen Theil (für die Götter u. s. w.) ausgeschieden und ihnen dargebracht hat MBH. 3, 104 (= **MĀRK. P.** 29, 46). अथ ते निर्वपिष्यन्ति (निर्वर्तयिष्यन्ति die neuere Ausg.) शत्रुमौसानि दानवाः HARIV. 13756. य-मायाकम्पनं तेन निरुवाप मन्वापशुम् BHATT. 14, 86. आह्वम् darbringen M. 3, 281. Verz. d. Oxf. H. 40, a, N. 1. इष्टोः M. 4, 10. 11, 27. मन्वापशान् 6, 5. **BHĀG. P.** 11, 18, 7. यश्च नो निर्वपेत्कृषिम् (so die ed. Bomb.) so v. a. und der nicht Ackerbau treibt MBH. 5, 1292. निरूप्य fehlerhaft für निरूप्य M. 6, 38. **BHĀG. P.** 1, 15, 39. 8, 16, 51. 9, 23, 9. निरूप्यते fehlerhaft für निरूप्यते 4, 1, 61. — Vgl. निरूपति fg., निर्वपण, निर्वाप, निर्वाप्य, यथानिरूपम्. — caus. aussäen: वया कीदृङ्गीतिबीजं निर्वपितम् PANĀT. 85, 20. (für die Götter u. s. w.) ausscheiden, austheilen: अर्निर्वाप्य समन्नचै मृतो जायति वायसः MBH. 13, 5483. — Vgl. 1. निर्वपणं und das caus. von वा mit निम्. — अनुनिम् nachher herausnehmen, — vertheilen u. s. w. TS. 2, 2, 1, 1. सौ-र्यमेककपालम् 3, 1, 2, 3, 2, 5, 2, 2. द्वादशसु रात्रिष्वनुनिर्वपेत् TBr. 1, 1, 1, 7. 5. पशौ पुरोडाशमनुनिर्वपति nach dem Thiere d. h. dessen Schlachtung findet eine Austheilung des P. Statt Ait. Br. 2, 8. Çat. Br. 3, 8, 3, 1. 11, 1, 2, 1. 13, 3, 3, 1. स एतं वैश्वं पूर्णमासे ऽनुनिर्वाप्यमपश्यत् निर्वपत् TS. 2, 5, 3, 1. — Vgl. अनुनिर्वाप्या. — अग्निनिम् zutheilen zu einem Andern hin, in doppelter Weise construirt. प्रायणीयस्य निष्कास उदयनीयमभि निर्वपति zu dem Rest des Pr. hin TS. 6, 1, 5, 5. ऽनिष्कासमुदयनीयनाभिनिर्वपेत् Ait. Br. 1, 11. — परिनिम् s. परिनिर्वप्यम्. — प्रतिनिम् als Gegenwerk austheilen u. s. w.: अघ्नरकल्प्या प्रति निर्वपेद्वातव्ये यज्ञमाने TS. 2, 2, 3, 4. TBr. 1, 7, 3, 7. **KAUÇ.** 48. — संनिम् zusammen austheilen Ait. Br. 3, 48. — परा bei Seite werfen, — legen, beseitigen: Leichname AV. 18, 2, 34. Pfeile VS. 18, 9. दत्तान् **ÇĀKṢH. Br.** 6, 23. परा वा एष यज्ञं पश्रन्वपति यौ ऽग्निमुद्गासयति TS. 1, 5, 3, 1. यज्ञा क्रुद्धः परोवपं मन्युना यदवर्त्या (अग्ने) 2, 2. परा वा एषो ऽग्निं वपति यौ ऽप्सु भस्मं प्रवेशयति 5, 2, 2, 5. Çat. Br. 2, 3, 3, 3. 6, 8, 3, 1. — परि bestreuen: पोसुभिः **LĪTJ.** 10, 15, 16. — Vgl. परिवाप, पर्यपति. — प्र ausstreuen, ausschütten, ausspritzen: मिक्ः प्र तन्मा अन्वपत्तमै-सि RV. 10, 73, 5. वसून्यादायं समुद्रं प्रौप्यत्त Ait. Br. 3, 11. त्रीन्वपयोः PĀR. GṚHJ. 2, 13. इन्द्रं प्रोथत्तं प्रवपत्तमर्षवम् RV. 10, 113, 3. — शिरोसि

पादपरत्ताणां बीजवत्प्रवपन्मुहुः MBH. 3, 15725. बीजवत्प्रवपन्मुहुः 3. 2109. 3, 1931. 5, 655. अन्नपूगान् 3, 1357. bestreuen: तत्रियान्प्रवपन्मुहुः 6, 5084. hinwerfen auf, in: प्रवपाणि (vgl. P. 8, 4, 16) शिरो भूमौ वानरस्य BHATT. 9, 98. प्रवपाणि वपुर्वङ्गा 20, 36. — Vgl. प्रवपण, प्रवापिन्. — caus. ausstreuen, ausschütten, ausspritzen: प्रैवाग्नेन वापयति रतः सौ-म्येन दधाति TS. 2, 4, 3, 1. 6, 6, 3, 1. **KĀTJ.** 11, 2. Vgl. प्रवापयित्. — अग्निप्र med. sich auf Jmd stürzen: यं मृषो ऽग्निं प्रवपेरन् TS. 2, 2, 3, 1. — प्रति 1) einstecken, einlegen, einfügen: मुकुटप्रत्युत्तमुक्ताकाण RĀGĀ-TAR. 3, 529. डर्जातभर्तुरङ्केषु प्रत्युत्तामिव वल्लभाम् (अपश्यत्) 507. प्रत्यु-त्तस्येव दधति तृष्णादीर्थस्य चतुषः UTTARAB. 68, 1 (87, 3). bestecken, belegen: मौलिमत्तर्गतन्नम्। प्रत्युपुः पद्मरगिणा RAGH. 17, 23. मर्कार्त्तप्रत्युत्त DĀ-ÇAK. 90, 8. — 2) auffüllen: भस्मना शुनः पदं प्रतिवपेत् **Àçv. Çr.** 3, 10, 14. — 3) hinzufügen TBr. 1, 2, 3, 5. — Vgl. प्रतीवाप. — caus. zugießen Suçr. 1, 33, 4. — वि zerstreuen, verwühlen: व्युत्तकेश **BHĀG. P.** 4, 2, 14. 3, 10. — सम् einschütten, hineinbringen; zusammenthun: Mehl in einen Topf VS. 1, 21. TS. 6, 1, 3, 4. आकृवनीयम् **Àçv. Çr.** 3, 10, 9. Çat. Br. 6. 7, 4, 13. 7, 1, 1, 38. 12, 3, 5, 1. वर्ष (von 2. वप्) nom. ag. gaṇa पचादि zu P. 3, 1, 134. **Sāmān** VS. 30, 7. 1. वर्षन (von 1. वप्) 1) n. das Scheeren, Rasiren H. 923. an. 3, 411. MED. n. 120. **HALĀJ.** 4, 36. Çat. Br. 3, 1, 3, 1. TS. 2, 7, 1, 1. °विधि Bez. dieses Anuvāka. M. 5, 140. 11, 151. HARIV. 7791. **BHĀG. P.** 1, 7, 57. VOP. 7, 91. ष्ट° PĀR. GṚHJ. 2, 1. केश° **Àçv. GṚHJ.** 1, 22, 23. **KĀTJ. Çr.** 4, 7, 11. 13, 4, 6. 15, 8, 28. 22, 6, 13. केशश्मश्रु° RĀGĀ-TAR. 6, 100. — 2) f. ई° Bar-berstube H. 1000. 2. वपन (von 2. वप्) n. 1) das Säen H. an. 3, 411. MED. n. 120. °वि-धि Verz. d. Oxf. H. 325, a, 8. धान्य° 86, b, 25. बीज° **KṢHIS.** 12, 5. PĀR. GṚHJ. 2, 13. — 2) das Aufstellen, Ordnen: भाण्ड° MED. p. 14. 1. वपनीय (von 1. वपन) in केश°. 2. वपनीय (von 2. वप्) adj. zu säen; n. impors.: आयुरिच्छन्ता न कदा-चित्परजायायां वपनीयम् KULL. zu M. 9, 41. 1. वर्षौ f. gaṇa भिदादि zu P. 3, 3, 104. Eingeweidehaut, Netzhaut, omentum (= मेदस् AK. 2, 6, 3, 15. H. 624. an. 2, 300. MED. p. 11. **HALĀJ.** 3, 13) VS. 12, 103. कृगस्य 21, 41. 33, 20. पुरा नाभ्या अग्निशमो वपामुत्खि-दतात् Ait. Br. 2, 6, 9. 12. fg. TS. 2, 1, 3, 4. वपामेकः (प्राणः) परिशये 6. 3, 3, 5. अयं वा एतत्पशूना यद्वपा 3, 5. मेदसा वपया यज्ञम् TBr. 2, 8, 4, 4. Çat. Br. 3, 8, 2, 19. 26. 4, 5, 3, 1. वशाये 3, 13. वपाङ्कति Ait. Br. 2, 14. °कामे **KĀTJ. Çr.** 13, 4, 6. 24. **GṚHJAS.** 2, 81. वपात्ते = वपाहोमात्ते **KĀTJ. Çr.** 20, 7, 26. 21, 2, 7. Das Ross hat keine वर्षा Çat. Br. 13, 5, 2, 20. **KĀTJ. Çr.** 20, 7, 7. वपा वपावतो जुहोति त्वचमुत्कर्तमवपाकानाम् Çat. Br. 13, 7, 4, 9. **KĀTJ. Çr.** 21, 2, 5. अय्यमाणा **Àçv. Çr.** 3, 4, 1. **GṚHJ.** 2, 4, 13. 4, 3, 20. वपया सप्तच्छिद्रया मुखं ह्रादयति des Todten **KAUÇ.** 81. **KĀTJ. Çr.** 25, 7, 36. वपामुत्खनति **KAUÇ.** 44. वपोद्धरण PĀR. GṚHJ. 3, 11. M. 12, 63. **JĀGṆ.** 3, 94. MBH. 1, 4572. 3, 10489. 7, 1976. 14, 2646. fg. R. 1, 13, 89. fg. (85. 37 GORR.). वपाधिअग्नीया die Bratspieße für die Netzhaut Z. d. d. m. G. 9, LXXV. वपाअग्नीया die zum Ausbraten der Netzhaut dienenden Geschirre Çat. Br. 3, 6, 3, 10. 8, 3, 17. 28. TS. 6, 3, 3, 2. **KĀTJ. Çr.** 6, 5, 7. 26. — Vgl.